

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
12.08.2015 को लोक सभा में
पूछा जाने वाला अतारांकित प्रश्न संख्या : 3710

यूरेनियम का उत्पादन

3710. श्री जी.हरि:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या प्रेसराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर्स के लिए यूरेनियम का उत्पादन देश की वार्षिक ईंधन आवश्यकता 650 मीट्रिक टन से बहुत अधिक है जिसका अर्थ है देश के पास अधिशेष परमाणु ईंधन है जो कई महीने चलेगा और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या प्रत्येक 700 एम.डब्ल्यू. रिएक्टर के लिए प्रति वर्ष 125 मीट्रिक टन की आवश्यकता है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या देश में विद्युत रिएक्टर्स की बढ़ती संख्या के साथ यूरेनियम की मांग बढ़ने की संभावना है; और
- (घ) यदि हाँ, तो सरकार द्वारा इस संबंध में क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

- (क) वर्ष 2014-15 की अवधि के दौरान, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (एनएफसी), हैदराबाद जोकि परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) का एक संघटक यूनिट है, ने, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु एजेंसी (आईएईए) के सुरक्षोपायों (आयातित यूरेनियम इस्तेमाल करने वाले) के अधीन वाले दाबित भारी पानी रिएक्टरों एवं स्वदेशी सुरक्षोपायों (स्वदेशी यूरेनियम का इस्तेमाल करने वाले) के अधीन वाले रिएक्टरों के लिए भी, 1252 मीटरी टन (एमटी) प्राकृतिक यूरेनियम आधारित नाभिकीय ईंधन का उत्पादन किया। यह उत्पादन, वार्षिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक कुल मात्रा से अधिक है।
- (ख) जी, हाँ। 700 मेगावाट की क्षमता वाले एक स्वदेशी दाबित भारी पानी रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर) की ईंधन संबंधी आवश्यकता लगभग 125 मीटरी टन UO_2 (प्राकृतिक यूरेनियम) प्रति वर्ष है।
- (ग) जी, हाँ।
- (घ) परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय (एएमडी), जोकि परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) का एक संघटक यूनिट है, ने, भारत में, विशेषकर आंध्र प्रदेश, झारखंड, मेघालय, राजस्थान एवं तेलंगाना में यूरेनियम के बड़े स्रोतों का पता लगाया है। यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसिल), जोकि परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है, खनन कार्य कर रहा है, एवं यह, झारखंड में सात यूरेनियम खानों तथा दो संसाधन संयंत्रों का प्रचालन कर रहा है। इनमें से कुछ यूनिटों को उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए, क्षमता विस्तार के अधीन रखा

गया है। तुम्मलापल्ली, आंध्र प्रदेश में एक बड़ी भूमिगत खान एवं संसाधन संयंत्र का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त, गोगी, कर्नाटक में एक नई भूमिगत खान एवं संयंत्र, किलेंग-पेंगडेंगसोहियांग मावथाबाह (केपीएम), मेघालय में एक विवृत्त गर्त खान, लंबापुर, आंध्र प्रदेश में एक विवृत्त एवं तीन भूमिगत खानें तथा राजस्थान के सीकर जिले में एक यूरेनियम खनन परियोजना क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

दिनांक 10.10.2008 को, संयुक्त राज्य अमरीका के साथ असैन्य नाभिकीय सहकार करार पर भारत द्वारा हस्ताक्षर किए जाने के परिणामस्वरूप, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीई), अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के सुरक्षोपायों के अधीन वाले नाभिकीय रिएक्टरों की ईंधन संबंधी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए, यूरेनियम अयस्क का आयात करता रहा है। इस कार्य के एक भाग के रूप में, यूरेनियम के आयात हेतु मैसर्स नावोई माइनिंग एंड मैटालर्जिकल कॉम्बिनेट स्टेट कंपनी (एनएमएमसी), उज़बेकिस्तान, मैसर्स जेएससी टीवीईएल कारपोरेशन, रूस, मैसर्स एनएसी कज़ाटॉमप्रॉम, कज़ाखिस्तान एवं मैसर्स केमिको, कनाडा के साथ संविदागत करारों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
